## भगत रविदास – सबद १०

## कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥

## रागु आसा, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८६

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥१॥
तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥१॥ रहाउ ॥
स्मपति बिपति पटल माइआ धनु ॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२॥
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३॥४॥

**सार:** जीवन की अनिवार्यता हमें उसकी निरंतर बदलती हुई वास्तविकता की सुंदरता को अपनाने का निमंत्रण देती है ठीक वैसे ही जैसे ऋतुएँ बदलती हैं। हर सर्दी ठंड लाती है लेकिन उसके बाद गर्मी की गर्माहट आती है। बसंत में रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं और पतझड़ में वह मुरझाकर गिर जाते हैं। यह प्राकृतिक चक्र जिसे हम सभी अनुभव करते हैं, हमें याद दिलाता है कि हमारे शरीर बढ़ते हैं, फलते-फूलते हैं, बूढ़े होते हैं और अंततः धरती की मिट्टी में मिल जाते हैं। इस चक्र का शोक मनाने से निराशा होती है क्योंकि हम प्रकृति के नियमों के उद्देश्य और महत्व को समझने से चूक जाते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि इन नियमों में हम सभी की आवश्यक भूमिका है। जीवन की इस लय को स्वीकार करने से हम परिवर्तन के भय से मुक्त हो जाते हैं और एक ऐसी सामंजस्यपूर्ण अवस्था को पहचानते हैं जहाँ हम अनेक में से एक हैं, हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है, पर कोई भी केंद्र में नहीं है। इस स्वीकार्यता से हमें हमेशा स्थायित्व रहने में नहीं बल्कि जीवन के साथ सक्रिय सहभागिता में संतोष मिलता है।

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥
हर पल बदलते रहने वाले शरीर से हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं? यह हमें बताता है कि वास्तविक मूल्य भौतिक शारीरिक रूप को बनाए रखने में नहीं बल्कि अपने भीतर स्थित शाश्वत आत्मा के पोषण में निहित है।

प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥१॥
जब सार्वभौमिकता के प्रति प्रेम कम हो जाता है तब उसका साधक भयभीत हो जाता है। यह 'डर' को शारीरिक गिरावट की प्रतिक्रिया के रूप में नहीं बल्कि आध्यात्मिक अलगाव से उत्पन्न पीड़ा के रूप में पुनःपरिभाषित करता है, जो निराश करता है। (१)

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
प्रकृति के नियमों को स्वीकार कर उन्हें अंतरात्मा में बसाना, कमल जैसे चरणों में एक पवित्र आश्रय पाने के समान है, जो शांति, विनम्रता और शुद्ध इरादों का प्रतीक है।

पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥१॥ रहाउ ॥
जब हम प्रकृति के नियमों को स्वीकार करते हैं तब हम जागरूकता हासिल कर सकते हैं और एकता के अनमोल सार को खोज सकते हैं जो समस्त सृष्टि को जोड़ता है। (१)(विराम)

स्मपति बिपति पटल माइआ धनु ॥
खुशहाली,  विपत्ति, मोह और भौतिक संपत्ति, यह सब माया के साधन हैं। यह नज़रिया बताता है कि सफलता की हमारी परिभाषा हमें ऐसे लक्ष्यों की ओर ले जा सकती है जिनमें वास्तविक संतुष्टि नहीं है।

ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२॥
सर्वव्यापी शक्ति की सर्वव्यापकता का भक्त, इन माया रूपी आकर्षणों में डूबा नहीं रहता। (२)

प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥
प्रेम का धागा भक्त को आपकी सार्वभौमिक सत्ता से बाँध देता है जो एकता को जीने वाली अटूट भक्ति का प्रतीक है।

कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३॥४॥
भगत रविदास कहते हैं, इस बंधन से मुक्त होने में कौन-सा गुण है? यह विचारोत्तेजक प्रश्न हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि जब हम एकता के बजाय विभाजन को चुनते हैं तब हम क्या खो देते हैं। (३)(४)

**तत्त्व:** भक्त रविदास उस प्रेम की गहन समझ प्रस्तुत करते हैं जो बाहरी प्रभावों के बावजूद स्थायी बना रहता है। जैसे एक धागा माला को दिशा और ताकत देता है वैसे ही प्रेम और भक्ति, जब एक साथ जुड़ते हैं तब हमें सार्वभौमिक एकता से और गहराई से जोड़ते हैं। वह कहते हैं कि सभी तरह की दौलत का असली स्रोत इस एकता के प्रति हमारी लगन में है, न कि दुनिया की दिखावटी सांसारिक उपलब्धियों में। यह समझ हमें क्षणभंगुर वस्तुओं को त्यागकर अपने भीतर मौजूद शाश्वत सार को खोजने के लिए प्रेरित करती है।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
**Oneness In Diversity Research Foundation**
**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com
**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**